जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 122
मई, 2026
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़ निम्नानुसार सदस्यता राशि

व्यक्तिगत वार्षिक	₹ 350/-	आजीवन व्यक्तिगत	₹ 3000/-
संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक	₹ 500/-	संस्था	₹ 5000/-

सदस्यता राशि प्रेषित करने के लिए ककसाड़ बैंक खाता विवरण

• खातेदार का नाम- **ककसाड़** • बैंक- **सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, खान मार्केट, दिल्ली**
• खाता संख्या- **3483675563** • आई.एफ.एस.सी. कोड- **CBIN0280310**
• एम.आई.सी.आर. कोड-**110016018**

विज्ञापन हेतु दरें

रंगीन		श्वेत/श्याम
फुल पेज (इनर)	₹ 15,000	₹ 10,000
बैक पेज कवर	₹ 25,000	—
बैक इनसाइड कवर	₹ 10,000	—
फ्रन्ट इनसाइड कवर	₹ 20,000	—
डबल स्प्रीड (इनर)	₹ 30,000	₹ 20,000

सहयोग राशि प्रेषित करने के बाद निम्नलिखित नंबर पर एस.एम.एस./फोन अथवा ई-मेल द्वारा तत्काल भेजें- 09968288050/09425258105/011-22728461, kaksaadeditor@gmail.com

कार्यालय---सी-54 रिट्रीट अर्पाटमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

ककसाड़ पत्रिका और लिटिल बर्ड प्रकाशन की पुस्तके यहाँ भी उपलब्ध है:

1. मौर्या बुक स्टाल
बी.एच.यू गेट लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र.

2. राजू मैगजीन सेन्टर
दुकान न.1, ओम साई गेस्ट हाउस (SBI ATM के पास) लंका, वाराणसी -221005 उ.प्र.

3. दीवान न्यूज एजेंसी
सदर बाजार, झाँसी-284001 उ.प्र.

4. पंजाब बुक सेंटर
एस.सी.ओ. 1126-27, सेक्टर-22 बी, चंडीगढ़-160022 हरियाणा

5. लालमुनि बुक स्टाल
आर.एम.शाह चौक, पूर्णिया-854301 (बिहार)

6. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
110, ई- बंगला साहिब रोड, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

7. स्टूडेंड कॉर्नर
गोलघर सिनेमा रोड, गोरखपुर-273003 उ.प्र.

8. यूनिवर्सल बुक हाउस
शॉप न.17, विक्रम बिल्डिंग, लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र

9. गीता पुस्तकालय
दुकान न.17, श्री विश्वनाथ मंदिर, बी.एच.यू, वाराणसी-221005 उ.प्र.

10. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
डिपार्टमेंट एल.सी, 4-ई/15, अशोक सेंटर झंडेवालान एक्स, नई दिल्ली-110055

11. इंडियन बुक डिपो
आदित्य भवन, प्रथम तल, बी.एन.वर्मा रोड अमीनाबाद पो.ऑ. के सामने, लखनऊ-226018 उ.प्र.

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

मई 2026 **वर्ष-11 • अंक-122**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन,
पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. मैंने जो गाँव में देखा वही चित्र में बनाती हूँ
(युवा भील कलाकार **कम्मी बाई** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लेख

8. कस्बाई इतिहास लेखनः संभावनाएं और चुनौतियां **: लक्ष्मीकांत मुकुल**

10. कोकरेंग बस्तर की जीवित मौखिक धरोहर **: दीप्ति ओग्रे**

12. भिखारी ठाकुर और बिहार की लोक संस्कृति... **: सचिन कुमार**

16. मणिपुर के पर्व-त्योहार **: वीरेन्द्र परमार**

21. सबर या साबर जनजाति एवं उनके सामाजिक-आर्थिक जीवन : **डॉ. कुमारी कंचन वर्णवाल**

23. बिहार मध्यकालीन भक्ति आंदोलन : समतामूलम समाज का दार्शनिक अधिष्ठान **: शिवांश मिश्रा**

28. चुकची जनजाति **: कुसुमलता सिंह**

31. संताल आदिवासी समाज में विवाह संस्कार एवं संबंधित रीति-रिवाज **: अशोक सिंह**

कहानी

33. एक परित्यक्त गुफा की भग्न मूर्ति : **पारमिता षंडगी**

36. वधू-मूल्य, बोकरा-भात : **रजनी शर्मा बस्तरिया**

अनुदित कविताएँ/कविताएँ/ग़ज़ल

41. **नाज़िम हिकमत,** (अनुवाद : **श्रीविलास सिंह**)

41. **अनुभव राज** 42. **मोहित नेगी 'मुंतजिर'**

43. **पंकज कुमार सिंह** 44. **आरती कुमारी**

बोली भाषा

20. **दोरली बोली**

पुस्तक समीक्षा

45. अँधेरे की कोख : **डॉ. सत्यभामा**

49. चुने हुए शेर - राजेन्द्र वर्मा : **के. पी. अनमोल**

48. **पत्र**

40. **क्या है ककसाड़?**

27. **कहावतें**

15. **यादें**

49. **साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - कम्मी बाई (भील कलाकार)
मो.: 76978-36852

संपादकीय

साथियों, हमेशा की तरह ककसाड़ की टीम की कड़ी मेहनत से एक बार फिर ककसाड़ का मई अंक अपने निर्धारित समय पर यानि कि महीने के पहले सप्ताह में आपके हाथों तक पहुँच रहा है। जब तक यह अंक आप तक पहुँचेगा, तब तक शायरों की भाषा में अगर कहें 'बेईमान मौसम' भी शायद एक और करवट ले चुका होगा। कहीं झुलसाने वाली कड़क धूप, कहीं अचानक उमड़ते बादल, कहीं बेमौसम वर्षा और ओलावृष्टि... प्रकृति अपनी भाषा में लगातार संवाद करती रहती है। सवाल यह है कि क्या हम पर प्रकृति की उस भाषा को, उसके संदेशों को, समझने की कोशिश कर रहे हैं या हमने प्रकृति को नियंत्रित करने का ठेका ले लिया है।

मनुष्य की विकास-यात्रा का इतिहास यदि एक वाक्य में कहा जाए तो वह है "प्रकृति पर अधिकार पाने के प्रयासों का इतिहास।" जब मनुष्य ने पहली बार अग्नि उत्पन्न करना सीखा, तब सभ्यता ने एक बड़ी छलांग लगाई। उसी क्षण से यह भ्रम भी जन्म लेने लगा कि अब प्रकृति हमारे नियंत्रण में है।

आज स्थिति यह है कि 'कर लो दुनिया मुठ्ठी में' जैसे जुमलों के पीछे दौड़ते-दौड़ते हम अब सूर्य को भी मुट्ठी में कैद करने की बात कर रहे हैं। धरती, पहाड़, जंगल नदियों का सौदा बंटवारा करने के बाद दुनिया की सर्वव्यापी सर्वविधि सक्षम कंपनियाँ अंतरिक्ष में बड़े-बड़े दर्पण और लेंस स्थापित कर सूर्य की किरणों को पृथ्वी के इच्छित क्षेत्रों में परावर्तित करने की योजना बना रही हैं, ताकि रात में भी दिन जैसा उजाला किया जा सके। 'उधार का सूरज' अब मोटा शुल्क लेकर धनी-मानी लोगों के आँगन में रात में भी हाजिरी भरेगा।

यूँ भी कह सकते हैं कि पैसे वालों की दुनिया में अब सूरज नहीं डूबेगा। और यह भी जाहिर है इस तकनीक के विकास में लगी कंपनियां चाँदी काटेंगी। यह विचार जितना आकर्षक लगता है, उतना ही भयावह भी है। क्योंकि सूरज की रोशनी अगर अंतरिक्ष में लगी लैंसों से आवर्धित करके किसी क्षेत्र विशेष पर केंद्रित कर दी जाएँगी तो पूरा क्षेत्र, पूरा का पूरा शहर मिनटों में धधक उठेगा और जलकर राख हो जाएगा।

कुछ ही समय पहले हमारे देश की राजधानी में भी हवा और आकाश को 'बेहतर और व्यवस्थित' करने का प्रयोग किया गया। दिल्ली की जहरीली हवा को कम करने के उद्देश्य से कृत्रिम वर्षा के प्रयास किए गए। विमान उड़ाए गए, बादलों में सिल्वर आयोडाइड जैसे पदार्थों का छिड़काव किया गया। अब जाहिर है कि चाँदी तो बेशकीमती धातु है ही और छिड़काव के लिए हवाई जहाज भी चाहिए होता है, तो जाहिर है कि यह प्रयोग सस्ता तो हो ही नहीं सकता। प्रयोग का दुखद पक्ष यह रहा कि इतने भारी-भरकम खर्चे के बावजूद परिणाम अपेक्षित नहीं रहे। कारण जो भी रहे हों, पर एक सच्चाई स्पष्ट होकर सामने आई कि,

"विज्ञान भी वहीं तक काम करता है, जहाँ तक प्रकृति उसे अनुमति देती है।"

विज्ञान शून्य में वर्षा नहीं कर सकता। उसे बादल चाहिए, नमी चाहिए। उसी तरह जैसे अग्नि के लिए ऑक्सीजन और जलने योग्य पदार्थ आवश्यक होते हैं। "सूर्य के बिना प्रकाश नहीं, बादलों के बिना वर्षा नहीं, पेड़ों के बिना आक्सीजन नहीं और संतुलन के बिना जीवन नहीं।" यह इतनी साधारण बात है, फिर भी हम इसे बार-बार भूल जाते हैं।

पाश्चात्य दार्शनिक फ्रांसिस बेकन ने कहा था, 'प्रकृति पर अधिकार पाने के लिए पहले उसका पालन करना पड़ता है।' हमने इस वाक्य के पहले हिस्से को तो पकड़ लिया, पर दूसरे हिस्से को छोड़ दिया। परिणाम यह हुआ कि अधिकार की हमारी आकांक्षा, संतुलन की समझ से आगे निकल गई।

आज हम नदियों को बाँध रहे हैं, पहाड़ों को काट रहे हैं, जंगलों को 'उत्पादक' बनाने के नाम पर एक ही प्रजाति के पेड़ों के रेगिस्तान में बदल रहे हैं। हवा में भरपूर जहर घोल चुके हैं, धरती के भीतर रासायनिक खाद और विषैले तत्वों का अंबार लगा चुके हैं। समुद्र तक हमारी गंदगी से कराह रहा है। और तब हम समाधान खोजते हैं कृत्रिम वर्षा में,कृत्रिम सूरज में,आक्सीजन पार्लर में, बीटी बीजों में।

हमने अनाज, सब्जियों, कपास के डीएनए में परिवर्तन किया है। यह तर्क दिया गया कि इससे उत्पादन बढ़ेगा, भूख